

महालक्ष्मी पूजा

दिल्ली, ३/११/१९८६

इस नववर्ष के शुभ अवसर पर दिल्ली में हमारा आना हुआ और आप लोगों ने जो आयोजन किया हुआ है ये एक बड़ी महत्वपूर्ण घटना होनी चाहिए। नववर्ष जब शुरू होता है तो कोई न कोई नवीन बात, नवीन धारणा, नवीन सूझबूझ मनुष्य के अन्दर जागृत होती है। वो स्वयं होती है। जिसने भी नवीन वर्ष की कल्पना बनाई है वो कोई बड़े भारी द्रष्टा रहे होंगे कि ऐसे अवसर पर प्रतीक रूप में मनुष्य के अन्दर एक नई उमंग, एक नया विचार, एक नया आन्दोलन जागृत हो जाए। ऐसे अनेक नवीन वर्ष आये और गये, नई उमंगें आयी, नई धारणाएँ आयी और खत्म हो गयी।

मनुष्य की आज तक की जो धारणाएँ रही हैं, एक परमात्मा को छोड़कर बाकी सब मानसिक क्रियाएँ या बौद्धिक परिक्रियाएँ थी। मनुष्य अपनी बुद्धि से जो भी ठीक समझता था उसका आन्दोलन कुछ दूर तक जा के फिर न जाने क्यों हटा और उसी विशेष व्यक्ति को और उसी समाज को या उस समय में रहने वाले लोगों पर आघात पहुँचा। इसका कारण क्या था ये लोग नहीं समझ सके। लेकिन आज हमें इसका साक्षात् बहुत ज्यादा अधिक स्पष्ट रूप से हो रहा है। जैसे कि धर्म की व्यवस्था हुई। धर्म की व्यवस्था में मनुष्य ने जब भी बुद्धि और मानसिक शक्तियों का उपयोग किया, तो बुद्धि के दम से वो एक वाद-विवाद के क्षेत्र में बंध गया और अनेक वाद-विवाद शुरू हो गये। गर सत्य एक है....तो पन्थ इतने क्यों हुए? इतने धर्म क्यों हुए? उन धर्मों में भी इतने जाति भेद क्यों हो गए हैं? ऐसे भेद करते करते न जाने दुनिया में कितने ही गुट जम गए हैं जिसका समझ में नहीं आता है। किसी से पूछते हैं कि आप साहब कौन धर्म के हैं तो आपको ऐसे धर्म का नाम बताएँगे जो आपने कभी सुना ही नहीं। ऐसे नए धर्म मेरे खयाल से हरेक नवीन वर्ष में ही उत्पन्न होते ही रहते हैं क्योंकि मनुष्य की बुद्धि, हर एक नवीन वर्ष में कोई न कोई उमंग लेकर पैदा हुई। इसी प्रकार हमारी बुद्धि से राजनैतिक क्षेत्र में भी उमंगें आयी और नित नई नई बातें बताई जैसे शुरुआत में माना गया कि चलो एक राजा ही रहे तो अच्छा है। राजा सबको समझ लेगा और राजा से ही सबको बड़ा लाभ होगा। तो देखा जिसको राजा बनाया वही दुष्ट निकला, उसी ने सताना शुरू कर दिया। फिर कहा, 'राजा तो ठीक नहीं। इसकी जगह ऐसा करो कि प्रजातन्त्र की व्यवस्था करो।' फिर उन्होंने प्रजातन्त्र की स्थापना की। प्रजातन्त्र में देखा गया कि हर एक आदमी अपने को बिल्कुल ऐसा समझता है कि वो स्वयं ही उस प्रजातन्त्र का संस्थापक है, संचालक है और कर्ता है। अब आप देख रहे हैं कि अमेरिका में कितना आतंक फैल रहा है। किस कदर हिंसा का आलम है। अगर पढ़ते हैं तो आश्चर्य होता कि प्रजातन्त्र का हाल ऐसा क्यों हो गया? ये तन्त्र सारा गड़बड़ क्यों? वही हाल बाद में आप साम्यवाद का देखेंगे। कहते हैं कि अब हम एक नया ऐसा संसार बसाएँगे कि जिसमें सब मनुष्यों में समानता आ जाए, उनमें कोई भी फर्क न रहे। खाने पीने में हर चीज़ में एक जैसा हो जाए और उसके अलावा उसको कोई स्वतन्त्रता न रहे। गर वो स्वतन्त्र हो गया तो स्व के तन्त्र में वो गड़बड़ हो जाता है। इसलिए इसकी स्वतन्त्रता हटा दी। मनुष्य को जब एकदम मूर्ख समझा जाए तभी ऐसा हो सकता है। पर मनुष्य मूर्ख नहीं है, वो तो हर जगह उसको आप जितना दबाईयेगा उतना ही वो खोपड़ी पर चढ़ेगा। तो ये भी चीज़ कुछ बन नहीं पाई। वो भी नहीं बनी, ये भी नहीं बनी।

इस तरह जहाँ देखते हैं वही आतंक है। धर्म के मामले में तो आप देख रहे हैं। किसी धर्म की हालत देखकर तो लगता ही नहीं कि परमात्मा भी कोई चीज़ हो सकती है। जो एकमेव हो, जो केवल हो, उसके लिए सब लोग आपस में सर काट रहे हैं। सबको मार डाल रहे हैं। तो ये कारण क्या है? अब्राहिम लिंकन, मार्क्स साक्षात्कारी व्यक्ति थे। मानव हित के लिए उन्होंने कार्य किये। परहित की जगह सब का अहित हुआ। हीरे को तोड़ फोड़ के कीचड़ में डाल दिया गया। विज्ञान आया तो लोगों ने सोचा कि अब उनकी सारी समस्याएँ हल हो गयी। पर विज्ञान को भी राक्षस बना दिया गया। एटम बम, हायड्रोजन बम खोपड़ी पर खड़े कर दिये गये। नाइलोन बना दिया। दुनियाभर की बीमारियाँ आ गयी, आफतें आ गयी। मानव हित के लिए बनी चीज़ें विध्वंसक बन गयी।

इसका कारण क्या है? कारण यह है कि जैसे एक सन्त ने कहा हुआ है कि मनुष्य की जो धारणा है या मनुष्य का जो विचार है,

मानव की जो चेतना है वह नीचे की ओर है और धीरे-धीरे वो गिर ही रही है। ये उन्होंने कहा नहीं। ये मैं कह रही हूँ क्योंकि आज वो बात साक्षात् हो रही है। श्री कृष्ण ने जो धारणाएँ रखी वो भी पूरी नहीं हुई, राम ने जो रखी वो भी पूरी नहीं हुई। उसके बाद सत्य स्वरूप थी, सत्य का ही अंग प्रत्यंग थी, वो सब पूरी नहीं हुई। इसका कारण यह है कि यह जब मनुष्य के दिमाग के घड़े में पड़ती है तो उसमें कोई ऐसी विषालू वस्तु है जो इसे विषाक्त कर देती है। यह विषालू वस्तु क्या है जिससे इस तरह का कारण होता है? वो है इसकी सीमाएँ। हर चीज़ की सीमा होती है। इसी तरह बुद्धि की भी सीमा होती है और उसी में इस सीमा में, बंध कर घुट कर के और नष्ट हो जाती है। जैसे कि अंगूर के सुन्दर स्वाद वाले रस को भी गर घड़े में बंद कर दिया जाए तो उसमें शराब बन कर उसका नशा चढ़ जाता है। उसी प्रकार मनुष्य के मस्तिष्क में, जो कि सीमित है, उसमें असीम चीज़ डाल देने से एकदम नष्ट हो जाती हैं। इसका मतलब यह नहीं की मनुष्य का मस्तिष्क ही कुछ खराब है। इसका मतलब यह है कि यह जो मस्तिष्क है इसकी सीमाएँ बढ़ानी होंगी। मनुष्य की चेतना जो है वह व्यापक करनी होंगी। इतनी व्यापक होनी चाहिए कि इसके अन्दर सब कुछ समा जाए। और वह खुली रहे इसका लक्ष्य क्या है, उधर तो हमारा ध्यान हटता जाता है। जब चीज़ सीमित होती जाती है तो उसका लक्ष्य क्या है उधर हमारा ध्यान होता है। हर चीज़ का लक्ष्य था और मनुष्य का भी है। हित क्या चीज़ है श्री कृष्ण ने बताया कि हित वो है जिससे आत्मा का कल्याण हो। अब आत्मा से हम लोगों का कल्याण। लेकिन जब आत्मा ही सोया हुआ है तो हमारा कल्याण कैसे हो?

आज का जो नवीन वर्ष है यह एक विशेष बात है क्योंकि आज की जो बात हम कर रहे हैं, आज का जो हम सहजयोग का कार्य कर रहे हैं यह हम अपने मस्तिष्क को विस्तीर्ण कर रहे हैं, महान कर रहे हैं जैसे श्री कृष्ण ने कहा है कि विराट का स्थान जो है वो इस मस्तिष्क में है। इसके अन्दर उसकी जड़े हैं। उन जड़ों को हम जागृत करेंगे। वो जड़े जागृत होने से ही हम उस सत्य को पूरी तरह से शोषित कर सकेंगे, आत्मसात कर सकेंगे। मनुष्य की जो सीमित प्रकृति है वह खुल जाती है। लैक्चर देना तो बहुत आसान है। यह कहना आसान है कि आप मनुष्य के हित के लिए यह करो, वह करो पर होता नहीं है। अन्त में मनुष्य अपना हित नहीं करता उल्टे अपना भी अहित कर सकता है और सारे समाज का भी अहित कर सकता है।

इस मस्तिष्क को बढ़ाने के लिए, सिर्फ एक ही तरीका है वह है कि हमारे अन्दर, हमारे हृदय में बसे हुए श्री आत्मा-राम को जागृत करना और उनके प्रकाश से हमारी बुद्धि को जागृत करना। हमारे मस्तिष्क को जागृत करना। सो कैसे होता है कि हमारे हृदय के अन्दर जो आत्मा है वो साक्षी स्वरूप बैठा हुआ है। कुण्डलिनी, जिसे आप गौरी माता कहते हैं, जब जागृत हो जाती है तो वो मस्तिष्क में यहाँ पर ब्रह्मरन्ध्र को छेदने के बाद परमात्मा का प्रकाश उसे अलौकिक करता है। परमात्मा का ही प्रतिबिम्ब हमारे हृदय में आत्मा के रूप में है। जैसे ही हमारी आत्मा जागृत हो जाती है, तो इस आत्मा के चारों तरफ यह सात चक्रों का आलोक, सात चक्र के मंडल भी जागृत हो जाते हैं। इन सात चक्रों के जो पीठ हैं वह हमारे मस्तिष्क में है। ये भी जागृत हो जाते हैं। इसलिए यह सात मंडल भी हमारे हृदय में जागृत हो जाते हैं। यह मंडल जागृत हो जाने से ही हमारी जो नसें हैं, हमारा जो मस्तिष्क है वो एक तरह से अति सूक्ष्म तरीके से खुल जाता है और उसके अन्दर शोषण करने की जो शक्ति है वह बढ़ जाती है। सत्य को शोषण करने की शक्ति बढ़ने से ही मनुष्य सत्य पर खड़ा हो सकता है। आज तक मनुष्य सत्य पर खड़ा नहीं हुआ है। सत्य को सुनता है, जानता है, देखता है पर उस पर खड़ा नहीं हो सकता है। सत्य को आत्मसात करने के लिए आत्मा की जागृती के लिए। वो आज सहजयोग में हो गई। सहज में ही हो गयी कहना चाहिए। जो इतने लोग आत्मा को प्राप्त हुए हैं। आत्मा को प्राप्त होने से वो शक्ति जागृत होती है आपके अन्दर, जिससे आप सत्य को आत्मसात कर सकते हैं। सत्य आपके अन्दर जागृत हो सकता है माने की दूसरा कौन है, दूसरा कौन है? सब तो हम ही हैं। हमारे ही अन्दर सब कुछ है। अब आपको सामूहिक चेतना आ गई है। तो उसमें साम्यवाद का भी सत्य आ गया। जब आप दूसरों को जान गए और अपने को भी, तो आप अपनी स्वतन्त्रता को प्राप्त हो गए। तो आपमें गणतन्त्र का भी जो सत्य है वो जागृत हो जाएगा। स्वतन्त्रता भी आ गई और एक तरह से पर का तन्त्र भी हाथ आ गया। दूसरों का जो तन्त्र है वो भी आप में आ गया। और आपकी स्वतन्त्रता भी आप में आ गयी जिसे आप स्वतन्त्र का तन्त्र कहते हैं।

शिवाजी कहते थे कि स्व का धर्म जानो। स्व का माने अपनी आत्मा का धर्म आप जाने। और आत्मा का जो धर्म है कहने

को तो स्व है लेकिन ये जगत्, विश्व माने विश्व जो आत्मा है, वो हमारे हृदय में बसा हुआ है। इसके जागते ही विश्व की भावना जिसे हम एक तत्त्वज्ञान के रूप में जानते थे, वो साक्षात् हमारे अन्दर समा जाती है। हमें उसके लिए कोई किताब पढ़ने की जरूरत नहीं, किसी को कोई जानने की जरूरत नहीं। यहाँ बैठे-बैठे आप सारी दुनिया को जान सकते हैं। इसमें कोई बड़े भारी आश्चर्य की बात नहीं है। कोई विशेष कार्य नहीं अगर आप मेरे लिए कहें तो मैं कहूँगी कि मैंने तो कुछ किया नहीं क्योंकि मैं तो जैसी हूँ वो तो मैं हूँ ही, वो तो अनादि काल से ही है। मेरी तो विशेष बात उसमें नहीं है। विशेषता आप लोगों की है जो कि आपने जाना, माना और पाया। लेकिन सहजयोग का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर उसका अन्त नहीं होता। ज्ञान तो हो गया, ज्ञान होने का माने आपके नाड़ी तन्त्र पर आपने जाना। जो लोग उल्टे तरीके से चलते हैं वो सोचते हैं कि ज्ञान करना माने ये कि हमें बुद्धि से जानना। बुद्धि से हमें जानना है बुद्धि से जानना माने क्या वो तो हम किताब पढ़ कर जान लेंगे या हम किसी गुरु के पास बैठकर जान लेंगे या किसी के उपदेश सुनने से हम जान लेंगे। ज्ञान का मतलब है कि आपके स्नायु तन्त्र में उसका ज्ञान हो। यही बोध है। यही बुद्ध है। आज आप बुद्ध हैं क्योंकि आपको बोध है।

ज्ञान तो अन्दर की जागृति से आता है। समग्र माने संघटित। जब तक आपके सारे चक्र संघटित नहीं होंगे तब तक समग्र ज्ञान कैसे होगा? पुस्तकें पढ़ने से थोड़ा ही ज्ञान हो जाएगा। ज्ञान प्राप्त करने का मतलब होता है बोध। सो कैसे हुआ? किसी ने ये नहीं पूछा कि ज्ञान कैसे प्राप्त होगा? श्री कृष्ण ने भी साफ तरीके से नहीं कहा कि कुण्डलिनी का जागरण होना चाहिए। वो तो माँ ने ही बताना था। सबको बैठ कर गीता सुनाते हैं। अर्जुन एक साक्षात्कारी व्यक्ति थे। एक अर्जुन से बात करी उन्होंने, बाकी सारी अन्धी दुनिया से नहीं। जब तक अन्धापन है, अन्धेपन का मतलब है कि बोध नहीं है आपकी नसों में, अभी तक वो सामूहिक चेतना का बोध नहीं है, जब तक ये नया आयाम आपके अन्दर जागृत नहीं हुआ तब तक सत्य सुनने की ही बात है। मनोरंजन मात्र है। तो बोध के बाद ही आपका चरित्र अपने आप बनता है। उसमें भी इन्होंने गड़बड़ करी। चरित्र बनाओ, चरित्र बनाओ। चरित्र बनाने में भी उनका भी चरित्र बनाओ। किसी ने कहा पगड़ी बाँधो, किसी ने कहा काशाय वस्त्र पहनो, किसी ने कहा की बोदी रखो। किसी ने इसाइयों से कहा वो इस तरह से हैट पहन कर घमो। पता नहीं क्या-क्या? अब वो सब कर रहे हैं। सारे कर्मकाण्ड कर डाले और देखा कि नर्क की ओर फिर चले जा रहे हैं। धर्म को समझे बिना लोग कुरीतियों तथा दुर्व्यसनों में फँसते चले जा रहे हैं। कुण्डलिनी जागृत होने होने पर आपका चरित्र स्वतः बन जाएगा। कुण्डलिनी आपको सुधार लेगी। जब आप स्वयं सत्य पर खड़े हो जाएंगे तो आरम्भ में कभी कभी कुछ कठिनाई आ जाती है, पर वह धीरे-धीरे ठीक हो जाती है। कैसे हो जाता है वो मैं आपको नहीं बताऊँगी। लेकिन वो हो जाता है। क्योंकि बताने पर आप लोग घबरा जाएंगे। उसके तौर तरीके जो हैं बहुत नाजूक हैं। लेकिन हैं बड़े कठिन। जैसे कि हम लोग कभी नहीं सोचते हैं कि किस तरह फूल के साथ काँटे आ जाते हैं? किस तरह से पेड़ बनते हैं? कैसे सुन्दर पत्तियों के आकार विकार बनते जाते हैं? ये हम कभी नहीं सोचते। जब होता है तब कहते हैं 'हाँ है।'।

साक्षात्कार के बाद एक साहब मोटर में बैठे और लोगों के साथ सिगरेट पी रहे थे। सिगरेट पीते पीते उनकी मोटर में दुर्घटना हो गयी। किसी को कुछ नहीं हुआ। उनका कुछ नहीं हुआ। उनकी सिर्फ ये अंगुली जो विशुद्धि की थी थोड़ी सी कट गयी। और फिर तो समझ गए बात क्या है। इस प्रकार धीरे धीरे सब कुछ ठीक हो जाता है कि ये हमारा चरित्र जो है जरा इधर उधर जा रहा है, मोटर जो है वो जरा से सीधे रास्ते पर ही है, वो थोड़ी बहुत इधर उधर फिसल रही है। फिर आप ठीक कर लेते हैं। करते-करते ऐसी दिशा में आ जाते हैं कि आप दोनों ही चीज़ों, गति और रोक दोनों के माहिर हो जाते हैं। वो मास्टरी जब आ गई तब समझ लेना चाहिए कि आप चालाक हो गए। मास्टर होने के लिए आपको निर्विकल्प में उतरना होगा। और जब आप निर्विकल्प में उतर जाते हैं तब आप गुरु महाराज हैं। मैं आप सबको खुद नमस्कार करती हूँ। तब आप लोग गुरु हो जाएंगे और फिर जब हम गुरुत्व को पा जाते हैं तब फिर हम जानते हैं सबका कि हाँ-हाँ हम भी ऐसे ही थे जिनको हम जानते हैं। हाँ, हाँ ऐसे ही हमारा था, ऐसा ही था। यही मामला था। हम सब जानते हैं। सब चीज़ बहुत आसान हो जाती है। तब आप गुरु हो जाते हैं और इसको कहना चाहिए कि सहज का और सहज में ज्ञान को प्राप्त होना। ये चीज़ जब तक नहीं आती है तब तक मनुष्य में सब चीज़ें बेकार है।

लेकिन जब आप गुरु हो जाते हैं तब आपको पता होता है कि अभी हम में कमियाँ हैं और तब आपको कोई न कोई तपश्चर्या करनी पड़ती है और वो तपश्चर्या का बतलब ये नहीं कि आप उस में भूखे मरे, ये तो माँ कभी नहीं चाहेगी, क्योंकि माँ को दुःख देना है तो आप भूखे रहिए। भूखे रहने कि कोई जरूरत नहीं। भूखे रहना कोई जरूरी नहीं है। अगर आपको नहीं खाना तो नहीं खाइए, पर परमात्मा के नाम पर केवल एक ही तप करना चाहिए माने ये कि आपको अपनी स्थिति निर्विचारमय बनानी चाहिए। ध्यान धारणा करके आपको अपनी सफाई करके अपनी स्थिति आपको निर्विचारमय बनानी चाहिए। निर्विचार में जब आप आ जाते हैं तभी आपका ये जो पौधा है, वह बढ़ता है। इसलिए बहुत से लोग कहते हैं, 'माँ हमसे ध्यान नहीं होता।' तो भैया आधे ही रह जाओगे। ध्यान रोज करना होगा। जब तक ये तपस्या नहीं की जाएगी, तब तक आप पूरी तरह से प्रकाशमय नहीं होंगे। जब तक आप ध्यान नहीं करेंगे, तब तक आप हमें भी नहीं समझेंगे। तब तक आप बिल्कुल हमें नहीं समझेंगे क्योंकि जब तक आप में त्रुटियाँ रहेंगी तब तक आप उन त्रुटियों के झरोखे से देखेंगे। जैसे कि अगर कोई नीले रंग का आप अपने आँख पर परदा डाल लें तो हम आपको नीले ही दिखाई देंगे, पीला डालेंगे तो पीले ही दिखाई देंगे। और इसी तरह अगर एक भी त्रुटि आपके अन्दर रहेगी तो इसी तरह हम आपको नजर आएंगे। हम आपको असलियत में नजर आएंगे ही नहीं। ये एक हमारा तरीका है। तो इन सब चीज़ों को आपको इस नवीन वर्ष में सोचना है कि अब हमारे पास ज्ञान प्राप्त हो गया है। हमें अब इसे अपना चरित्र बनाना है। और चरित्र बनाने के लिए हमें तो तप और ध्यान करना है। वो हमें करना है किसी भी हालत में। लोग कहेंगे कि माँ हमारे पास समय नहीं है, लेकिन ये बात नहीं। लन्दन जैसे शहर में जहाँ इतनी ठण्ड रहती है, लोग चार बजे उठ कर, नहा कर ध्यान करते हैं। लेकिन हिन्दुस्तान में लोग कहते हैं, 'अच्छा, अगले साल करेंगे, अगले साल करेंगे।' और जैसे-जैसे हम उत्तर की ओर बढ़ते हैं 'लोग सोचते हैं क्या जरूरत है? हम तो कैलाश की तरफ बैठे हुए हैं। हमको क्या जरूरत है? दक्षिण वाले करते रहें मेहनत, हम तो उत्तर में बैठे हैं।' उत्तर प्रादेशिक क्षेत्र जो है तो जितने भी लोग उत्तर में बैठे हुए हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि हालांकि कैलाश उत्तर में है, लेकिन दृष्टि शिव की दक्षिण में है। इसलिए उनको दक्षिण-मूर्ति कहते हैं। इसलिए चाहिए कि आप लोग भी अपनी ओर उनकी दृष्टि लायें। उनकी दृष्टि आपकी ओर लाने के लिए थोड़ी सी योग्यता होनी चाहिए और उस योग्यता में शुद्धि भी। यही गौरी स्वरूपा कुण्डलिनी, आपके अन्दर जो शुद्ध इच्छा है, उसको आपको जागृत करना है। अनुशासन जिसके बारे में हमें सतर्क होना है।

दुनिया भर के कायदे कानून हमें आते हैं। पर अन्दर का अनुशासन हम में अभी नहीं आया। देश और संस्कृति के व्यर्थ के अहंकार की भावनाओं से मनुष्य का जो अनुशासन है वो चला जाता है। वो बहुत जरूरी है हमारे अन्दर। और दूसरी चीज़ यहाँ राजकीय आन्दोलन की वजह से भी हमें अनुशासनहीनता आ गयी है। ये सारी चीज़ें व्यर्थ हैं।

मैंने बताया था कि हमें भाई-बहन का रिश्ता तो समझ में आता है लेकिन भाईचारा का नहीं। भाईचारा का रिश्ता समझना है। बहनचारा और भाईचारा। लोग कहते हैं कि दो औरतें कहीं रहे, चाहे वो बहनें हो, रह नहीं सकती लेकिन मैं तो मर्दों को देखती हूँ वो भी कुछ कम नहीं है। अब इनकी लड़ाइयाँ और तरह की होती हैं, औरतों की दूसरी तरह की। आदमियों की लड़ाइयाँ जब शुरू होती हैं तो कुछ समझ में ही नहीं आता है कि इसका स्वरूप कहाँ से पैदा हुआ है। आदमी, आदमी का विरोध करता है और औरत औरत का। दोनों पशोपेश में है मेरे लिए। तो मैं ये सोचती हूँ अरे भाई, हम बात कर रहे हैं आसमान की और आप पाताल की। हम कह रहे हैं कि क्या-क्या आपको सितारे बना कर आकाश में चमकाएँ और आप लोग मिट्टी के बराबर भी बात नहीं समझते। मैं तो अवाक रह जाती हूँ जब मैं ये बातें सुनती हूँ, मुझे बड़ा आश्चर्य होता है। सबसे पहली बात है माँ को खुश करने के लिए कि आपस में आप भाईचारे से और बहनचारे से रहें। अगर आपको वाकई आनन्द लेना है तो वो है भाईचारे से। और अब सहज योग का भाईचारा कैसे चलता है? वो इस प्रकार कोई आया आप के पास, तेरे तो भूत लग गया तू जा। वो मेरे पास आया, 'माँ, मुझे भूत चिपक गया।' मैं कहती हूँ तुमको किसने बताया? 'वो गया था न, उन्होंने बताया कि तुझे भूत लग गया है। माँ, मेरा भूत छुड़ाओ।' मैंने कहा तुम उन्हीं को कह दो तुम्हें भूत लग गया। तुम्हें कहीं भूतवूत नहीं लगा। क्यों मेरे पीछे पड़ा है? 'नहीं, उसने बताया तुम्हारे पीछे भूत लगा है।' दूसरा आया तो कहेगा कि माँ, जो कोई देखता है वो यही कहता है तुम्हारा ये चक्र पकड़ रहा है। माँ, मेरा ये चक्र पकड़ रहा है? अरे, मैंने कहा भाई, कि तुम जागृति पाओ, ध्यान करो सब ठीक हो जाएगा। तो कहने का मतलब यह है कि आप लोग अपने

को इतने शक्तिशाली बनाइये कि भूत बाहर भागते फिरे। आपने देखा कि एक सहजयोगी आया तो सारे भूत दिल्ली से भाग खड़े हुए। हजारों की तादाद में भाग जाएंगे। लेकिन आप भी शक्तिशाली होइये। आप तो भूतों से डरते हैं तो और आप की खोपड़ी में बैठेंगे नहीं तो क्या होगा। एक भूत वाला आदमी आ गया तो सारे के सारे भाग खड़े हुए। सो ये भाई चारे की बात है। हमारे अन्दर संघ है। इसलिए बुद्ध ने कहा है 'संघम् शरणं गच्छामि।' संघ की शक्ति हमारे अन्दर है। हम सब जैसे भी हैं वो सब मिलकर हैं। अगर हम अपनी संघ शक्ति को बढ़ा लें तो कोई भूत यहाँ आएगा ही नहीं। वह तो पहले ही भाग जाएगा। एक नहीं हजारों कारवाँ के कारवाँ यहाँ से भाग खड़े होंगे। लेकिन हमारी संघ शक्ति नहीं है। इसलिए हम कमजोर हैं। हम यह नहीं सोचते की सहजयोग बढ़ रहा है। इसमें योगदान दें। एक दूसरे की शिकायतें ही करते रहते हैं। अपनी जो संघ शक्ति है वो बनाएँ। अन्दर जो भी डर है उसको निकालिए। डर को आप को एक तरफ में कर देना है और आपको भूत से या किसी से डरने की कौन सी बात है। बहुत सा हमारा झगड़ा खत्म हो जाए अगर हम किसी से ने डरे तो। आपस का झगड़ा अगर खत्म हो जाए अगर हम इस आदमी से नहीं डरेंगे। हमें ये डर लगा रहता है कि हमारी पोज़िशन खराब हो जाएगी। यहाँ कोई राजनीति तो है नहीं कि आज कोई प्रधानमन्त्री बनने वाला है, कोई उप-प्रधानमन्त्री बनने वाला है। जो सब कोई अपनी अपनी कुर्सी संभाले बैठे हुए हैं। यहाँ तो सबकी कुर्सी जमाने का काम है। किसी को आसन दिया है। आपका आसन जमाने का कार्य होना चाहिए। तो भाईचारे से क्यों न सब करें। पिछली मर्तबा में सबसे मजाक कर रही थी। मैंने कहा था कि आप किसको भाई बना रहे हैं बताओ। पहले बड़ी सहेली का बड़ा महत्त्व होता था। आजकल सहेली शब्द तो रहा ही नहीं। औरतों में बन पाना असंभव बात है। दो औरतें अगर मिलें तो मेरा तो कल्याण हो जाए। मुश्किल ये होती है कि न जाने कहाँ से इनको सब खराब बातें मिल जाती हैं। अच्छी बात कुछ नहीं मिलती। एक दूसरे से डरती हैं। हर समय परेशान रहती हैं। यह सब आप छोड़ दीजिए। एक दूसरे पर भरोसा करना सहजयोग का नियम है। अब देखिए कि इतना रूपया इकठ्ठा होता है सहजयोग में। हम लोग भी बहुत सा रूपया देते हैं। और उसका एकाऊंट होता है। आपको आश्चर्य होगा कि मैंने कभी भी ट्रस्ट का हिसाब नहीं देखा। आज तक मुझे ये भी नहीं मालूम कि कितना पैसा है। बहरहाल हमारे भाईसाहब आजकाल चार्टर्ड अकाउंटेंट है। ये तो मैं उनसे कहती थी कि तुम देख लो। वो आ कर मुझे कहते हैं अरे क्या कर रहे हो। इतने कंजूस लोग हैं कि एक भी पैसा नहीं खर्च करते और तुम्हारे सहजयोगी इतने कंजूस क्यों हैं? इनके ऊपर आयकर आ जाएगा।

सो सहजयोगी कहते हैं कि खर्चा कहाँ करें कोई बन ही नहीं रहा खर्चे का तो। मैंने कहा, 'कोई इन्तजाम करो। कोई खर्चा करो कि सब ठीक हो जाए।' लोग मुझे कहते थे कि देखिए माँ आपको देखना चाहिए था। मैंने कहा मुझे हिसाब किताब आता ही नहीं। जो हो रहा है होने दो। फिर भी एक पैसा इधर से उधर नहीं हुआ। कोई गड़बड़ नहीं हुई। ये माँ का भरोसा है। माँ का विश्वास है। उसी तरह आप एक दूसरे पर विश्वास करो। एक दूसरे की गलतियों को बढ़ा चढ़ा कर मत बताइये। दूसरे आप अच्छाइयाँ बताइये। ये सोचिए कि उस औरत में कौन से ऐसे गुण हैं। इसका मतलब यह नहीं कि आप अपने को दोष दीजिए। बहुत से लोगों कि यह भी आदत है कि मैं ही खराब हूँ। बिल्कुल नहीं। आप तो बहुत ही बढ़िया है। पहली चीज़ यह है कि आप अपना दोष मत देखिए लेकिन यह देखिए कि मैं जिसकी बुराई कर रहा हूँ उसके अच्छे गुण क्या है। इससे आप अच्छे हो जाएंगे। लेकिन अगर आप दूसरों के दोष देखते रहेंगे तो सारे दोष आपके अन्दर आ जाएंगे। इसलिए दूसरों के दोष ठीक करने हैं। दूसरों से प्यार करने में, दूसरों से वार्तालाप करने में, एक मधुरता लेकर के एक प्रेम की भावना लेकर अगर आप करे तो सहजयोग बहुत आसानी से फैलेगा। बहुत आसानी से आगे जाएगा। और सारे संसार में फैलेगा। सारी दारोमदार मेरी आप पर है।

तो आज नवीन वर्ष के शुभ अवसर पर भाईचारे का व्रत हमने लेना है। सबके लिए जीने का तरीका यदि आ गया तभी मनुष्य विशाल हो जाता है और ये विशालता आप प्राप्त कर सकते हैं सहजयोग से। और आज इस नवीन दिवस पर ये विशेषता का एक संदेश अपने हृदय में रखना चाहिए कि आज से बस हम विशाल हैं और ये विशालता हमारे हृदय में बसे और इसमें हम सारे विश्व को देखें। हम सब भाई-बहन एक माँ के बेटे हैं। एक सूत्र में बँधे हुए हैं। अत्यन्त सुन्दरता से जुड़े हुए, प्यारे-प्यारे सब फूल है। जब हम अपने प्रति ऐसी सुन्दर भावना कर लेंगे। और दूसरों के प्रति भी, तभी जाकर के एक सुन्दर सा हार तैयार होगा।

हमारा अनन्त आशीर्वाद है कि आप सब लोग इस विशेष रूप को प्राप्त करेंगे।